पिताजी और चौबीस इंच की साइकिल

डॉ. प्रदीप त्रिपाठी

संपादक- कंचनजंघा पत्रिका (सिक्किम)

संप्रति : सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

पिता की बढ़ती उम्र के साथ-साथ
साइकिल बूढ़ी होती गई
और
पिता का प्रेम बढ़ता गया
सचमुच इतना प्रेम
कि
पैदल होने के बाद
साइकिल पिता के साथ
पैदल हो जाती है आज भी
जी हाँ,
मैंने पिता की साइकिल को
पैदल चलते देखा है।

मान्यता ऐसी है कि
साइकिल के साथ पिता का पैदल होना
अथवा
पिता के साथ साइकिल का पैदल होना
अब फलाने के पिताजी की पहचान है।

यकीनन पिता का प्रेम
जितना अपने बच्चों से है
उतना ही
चौबीस साल पुरानी
साइकिल से भी।

सचमुच
साइकिल चलाते हुए पिताजी
हमेशा जवान दिखते हैं।

पिता की साइकिल को
गाँव का हर आदमी
पहचानता है।
साइकिल में करियर और स्टैंड के न होने के साथ-साथ
घंटी का खराब होना
पिता की साइकिल होना है।

महज कहने भर के लिए
पिताजी साइकिल से चलते हैं
और
साइकिल पिताजी से...
सच तो यह है कि
पिताजी और साइकिल
दोनों पैदल चलते हैं।

सचमुच तुम्हारी साइकिल का पुराना ताला
उसमें लिपटी हुई जर्जर सीकड़
जब हनुमान मंदिर के छड़ों में नाहक जकड़ दी जाती है
तो बच्चे सवाल करते हैं
बाबा! बताओ इतनी पुरानी साइकिल को कोई पूछेगा क्या?

यकीनन
पिताजी को पुराने सामानों को सहेजकर रखने की पुरानी आदत है
पिताजी सहेजकर रखते हैं कबाड़े को भी
अपनी पुरानी मान्यताओं के साथ
इसीलिए पिता की नजर में
उनकी साइकिल जवान है, आज भी।

दुनिया में ऐसे पिता बहुत कम होते हैं

जिनकी साइकिल को

पिता के साथ-साथ

चलाती होगी उनकी तीसरी पुस्त भी

या

चलती होगी किसी पिता की तीसरी पुस्त

चौबीस इंच की साइकिल से

आज भी।

पेशावर के बच्चों के प्रति

बच्चों ने नहीं पढ़ी थी
कोई ऐसी मजहबी किताब अथवा धर्म-ग्रंथ
जिसमें लिखा हो
बम, बारूद और बंदूक की गोलियों की अंतहीन कथा

ऐसी कोई भी किताब नहीं पढ़ी थी
बच्चों ने

जिसमें दर्ज हो क्रूरता, हत्या और बलात्कार

बच्चों ने नहीं बूझी थी ऐसी कोई जिहादी-पहेली
जिसमें धर्म की आड़ में

नफ़रत को पैदा किया जा सके

ऐसा कुछ भी नहीं सीखा था
इन बच्चों ने

बच्चों में बहुत भय था
सिर्फ इसलिए कि
बच्चे जानते थे
वे बेकसूर हैं।

उम्मीद

मुझे चाहिए

नदी भर नींद

पहाड़ भर स्वप्न

और

रोटी पर भूख

तुम्हारी याद में

उम्र भर उम्मीद बुनता हूँ।

यह जो मनुष्य है

यह, जो मनुष्य है
इसमें
सर्प से कहीं अधिक विष है
और
गिरगिट से अधिक कई रंग
दोनों का एक साथ होना
अथवा बदलना
मनुष्य, सर्प और गिरगिट के लिए तो नहीं
परंतु
मानव-सभ्यता के लिए घातक है।

आत्महत्या करने से पहले

(1) जब यह पता चला

कि ईश्वर तो पहले ही मर चुका है

मैंने अनुमान लगाया

वह जरूर तंग आ चुका रहा होगा

ईश्वर ने आत्महत्या कर ली।

(2) मरना तो था ही...

ईश्वर का मरना अकारण नहीं रहा होगा

वह तो अपनी मौत से भी मर सकता था

गोया

वह समझ गया हो कि

उसे मार दिया जाएगा

ईश्वर ने आत्महत्या कर ली।

(3) ईश्वर धनवान था
ईश्वर बलवान था
ईश्वर विवेकवान था
ईश्वर धैर्यवान था
बस
ईश्वर के पास एक चीज की कमी थी
ईश्वर प्रतिरोध नहीं कर सकता था
ईश्वर पश्चाताप भी नहीं कर सकता था
ईश्वर ने आत्महत्या कर ली।

(4) उसे बता दिया गया था
ईश्वर अजर-अमर है
ईश्वर पहली और अंतिम सत्ता है
जब उसे यह पता चला कि
यह महज प्रोपोगैंडा है
उसकी भी मृत्यु निश्चित है
ईश्वर ने आत्महत्या कर ली।

(5) ईश्वर का कोई धर्म नहीं था
ईश्वर की कोई जाति भी नहीं थी
ईश्वर की कोई भाषा भी नहीं थी
ईश्वर समझ गया था
उसके साथ भी साजिश हो सकती है
उसे भी युद्ध करना पड़ सकता है
ईश्वर ताकतवर था
ईश्वर साहसी नहीं था
पर
ईश्वर समझदार था
ईश्वर ने आत्महत्या कर ली।